COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 17, Issue No: 2, Year: 2026 (November)
PP: 182-189
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

संस्कृत,भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं आधुनिक विषयों के समन्वय द्वारा समग्र शिक्षा की संभावनाएँ

विकास जैन

प्रो०, दोआबा कॉलेज, जालंधर

सारांश

भारत की स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र बनाने की परिकल्पना आर्थिक समृद्धि, वैज्ञानिक प्रगति, सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संतुलन तथा सांस्कृतिक चेतना के समन्वित विकास पर आधारित है। इस संदर्भ में भारतीय सांस्कृतिक विरासत और भारतीय ज्ञान प्रणाली का महत्त्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित, खगोलविद्या, चिकित्सा, कृषि, स्थापत्य, भाषा-विज्ञान, साहित्य, योग, संगीत, नाट्य तथा पर्यावरण संबंधी विचारों का समृद्ध भंडार उपलब्ध है। संस्कृत साहित्य इस ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसमें ज्ञान, विवेक, लोककल्याण, नैतिकता, कर्तव्य, सहअस्तित्व और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता जैसे मूल्य अभिव्यक्त हुए हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य विकसित भारत-2047 की परिकल्पना और सांस्कृतिक विरासत के अंतर्संबंध का विश्लेषण करना तथा प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक शैक्षिक विषयों के साथ एकीकृत करने की संभावनाओं का अध्ययन करना है। विशेष रूप से समग्र शिक्षा, अंतर्विषयी अध्ययन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, संस्कृत साहित्य की समकालीन प्रासंगिकता, डिजिटल संरक्षण, अनुसंधान, सांस्कृतिक पर्यटन और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था पर विचार किया गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा में शामिल करना केवल प्राचीन परंपराओं का परिचय देना नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक प्रमाणों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आधुनिक तकनीक और मानवीय मूल्यों के समन्वय से ज्ञान की नई संभावनाओं का विकास करना है। इस प्रकार सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और उसका रचनात्मक उपयोग भारत को 2047 तक ज्ञान-समृद्ध, समावेशी, आत्मविश्वासी तथा सांस्कृतिक रूप से सशक्त राष्ट्र बनाने में योगदान दे सकता है।

मुख्य शब्द: विकसित भारत- 2047, सांस्कृतिक विरासत, भारतीय ज्ञान प्रणाली, समग्र शिक्षा, संस्कृत साहित्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अंतर्विषयी अध्ययन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक संरक्षण।

भारत की सभ्यता का विकास हजारों वर्षों की ऐतिहासिक, सामाजिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से हुआ है। इस दीर्घ परंपरा ने भारतीय समाज को विविध भाषाएँ, साहित्यिक विधाएँ, ज्ञान-परंपराएँ, कलात्मक अभिव्यक्तियाँ तथा जीवन-मूल्य प्रदान किए हैं। वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराण, बौद्ध एवं जैन साहित्य, शास्त्रीय भाषाएँ, लोकसाहित्य, संगीत, नृत्य, स्थापत्य और पारंपरिक शिल्प भारतीय सांस्कृतिक विरासत के विविध आयामों को प्रस्तुत करते हैं। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में ज्ञान को मानव-जीवन के विकास का प्रमुख साधन माना गया है। भगवद्गीता में कहा गया है—

"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते॥" — भगवद्गीता, 4.38

अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला कुछ नहीं है। यह कथन ज्ञान के महत्त्व को रेखांकित करता है। आधुनिक संदर्भ में ज्ञान का अर्थ केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि तथ्यों की जाँच, तर्कपूर्ण

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

विश्लेषण, समस्याओं के समाधान और विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता भी है। विकसित भारत के निर्माण के लिए ऐसी शिक्षा आवश्यक है जो विद्यार्थियों को विषयगत ज्ञान के साथ आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, नैतिकता और सामाजिक संवेदनशीलता से भी संपन्न बनाए।

इसी संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल प्राचीन ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विभिन्न समुदायों, क्षेत्रों और पीढ़ियों द्वारा विकसित तथा संरक्षित ज्ञान भी सम्मिलित है। कृषि, जल-संरक्षण, पारंपरिक चिकित्सा, शिल्प, भाषा, गणित, दर्शन और कलाओं से संबंधित ज्ञान इसके विविध रूप हैं।

हालाँकि प्राचीन ज्ञान का अध्ययन करते समय ऐतिहासिक प्रमाणों और वैज्ञानिक पद्धतियों को महत्त्व देना आवश्यक है। प्रत्येक पारंपरिक मान्यता को आधुनिक वैज्ञानिक तथ्य मान लेना उचित नहीं है। इसी प्रकार किसी ज्ञान-परंपरा को केवल प्राचीन होने के कारण अस्वीकार करना भी उचित दृष्टिकोण नहीं होगा। आवश्यक यह है कि उसके ऐतिहासिक संदर्भ, उपयोगिता, सीमाओं और समकालीन प्रासंगिकता का निष्पक्ष परीक्षण किया जाए।

भारतीय ज्ञान प्रणाली: अवधारणा, स्वरूप और प्रमुख विशेषताएँ

भारतीय ज्ञान प्रणाली से आशय भारत में विभिन्न कालखंडों के दौरान विकसित ज्ञान, चिंतन, प्रयोग, कौशल और शिक्षण-परंपराओं से है। इसमें शास्त्रीय ग्रंथों में व्यवस्थित ज्ञान के साथ-साथ समुदायों द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित पारंपरिक ज्ञान भी शामिल है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में भारतीय ज्ञान परंपरा को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में व्यवस्थित रूप से शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इन दिशा-निर्देशों का उद्देश्य भारतीय ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययन, अनुसंधान और शिक्षण के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्र सम्मिलित किए जा सकते हैं—

गणित एवं खगोलविद्या: भारतीय गणितीय परंपराओं में संख्या, गणना, ज्यामिति और खगोलीय गणनाओं से संबंधित योगदान मिलते हैं। आर्यभट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य और अन्य विद्वानों के कार्य इतिहास-एवं-गणित के अंतर्विषयी अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

भाषा-विज्ञान: पाणिनि की अष्टाध्यायी संस्कृत व्याकरण की व्यवस्थित परंपरा का उल्लेखनीय उदाहरण है। इसका अध्ययन व्याकरण, भाषाविज्ञान, रूपविज्ञान और भाषा-संसाधन तकनीकों के ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन में उपयोगी हो सकता है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य परंपराएँ: चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथ भारतीय चिकित्सा इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। इनका अध्ययन ऐतिहासिक चिकित्सा-ज्ञान, चिकित्सा-शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी सांस्कृतिक दृष्टिकोण को समझने में सहायता करता है। आधुनिक चिकित्सा-निर्णयों के लिए प्रभावकारिता और सुरक्षा संबंधी समकालीन वैज्ञानिक प्रमाण आवश्यक हैं।

कृषि एवं पर्यावरण: पारंपरिक कृषि, जल-संचयन, स्थानीय बीजों, मौसमी अनुभवों और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से संबंधित ज्ञान का अध्ययन पर्यावरण विज्ञान, कृषि विज्ञान और सतत विकास के संदर्भ में किया जा सकता है।

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

प्राचीन भारतीय ज्ञान और आधुनिक विषयों का एकीकरण

प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक विषयों के साथ एकीकृत करना समकालीन शिक्षा के लिए एक महत्त्वपूर्ण संभावना है। इसका उद्देश्य आधुनिक विज्ञान के स्थान पर प्राचीन विचारों को स्थापित करना नहीं, बल्कि ऐतिहासिक ज्ञान-संसाधनों और आधुनिक अनुशासनों के बीच सार्थक संवाद विकसित करना है। जब विद्यार्थियों को किसी आधुनिक विषय के साथ उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विभिन्न सभ्यताओं के योगदान और संबंधित दार्शनिक प्रश्नों का अध्ययन करने का अवसर मिलता है, तो उनका ज्ञान अधिक व्यापक बन सकता है। इस प्रकार का एकीकरण विद्यार्थियों को तथ्यों को याद करने के बजाय उनके संदर्भ, विकास और उपयोगिता को समझने के लिए प्रेरित करता है।

गणित और ऐतिहासिक गणितीय परंपराओं का समन्वय

आधुनिक गणित के शिक्षण में भारतीय गणितीय इतिहास को शामिल करके विद्यार्थियों को गणित के विकास की व्यापक समझ दी जा सकती है। भारतीय गणितीय परंपरा में संख्या-पद्धति, गणना, बीजगणित, ज्यामिति और खगोलीय गणनाओं से संबंधित महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदान मिलते हैं।

उदाहरण के लिए, गणित की कक्षा में किसी गणितीय अवधारणा को समझाते समय उसके ऐतिहासिक विकास, प्राचीन ग्रंथों में प्रयुक्त विधियों और विभिन्न सभ्यताओं के पारस्परिक योगदान पर चर्चा की जा सकती है। विद्यार्थी प्राचीन गणना-पद्धतियों की तुलना आधुनिक एल्गोरिदम से कर सकते हैं और यह समझ सकते हैं कि गणितीय विचार समय के साथ किस प्रकार विकसित हुए।

इस प्रकार के अध्ययन में ऐतिहासिक दावों की पुष्टि मूल स्रोतों और विश्वसनीय अकादमिक शोध से की जानी चाहिए। किसी प्राचीन विधि को आधुनिक गणितीय सिद्धांत के पूर्णतः समान बताने से पहले उसके अर्थ, संदर्भ और प्रमाणों का परीक्षण आवश्यक है।

भाषा-विज्ञान, संस्कृत व्याकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

संस्कृत व्याकरण की परंपरा भाषा के व्यवस्थित विश्लेषण का एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है। पाणिनि की अष्टाध्यायी में ध्वनि, रूप, प्रत्यय, शब्द-निर्माण और व्याकरणिक नियमों की सुव्यवस्थित चर्चा मिलती है। आधुनिक भाषा-विज्ञान में ध्वनिविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविन्यास, अर्थविज्ञान और संगणकीय भाषाविज्ञान का अध्ययन किया जाता है। संस्कृत व्याकरण और आधुनिक भाषाविज्ञान के तुलनात्मक अध्ययन से विद्यार्थियों को भाषा की संरचना और नियमबद्धता समझने में सहायता मिल सकती है। इसी प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता और प्राकृतिक भाषा संसाधन के क्षेत्र में संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं के डिजिटल पाठ, शब्दकोश और व्याकरणिक संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है। मशीन द्वारा पाठ का विश्लेषण, शब्दरूपों की पहचान और प्रारंभिक अनुवाद जैसे कार्यों में तकनीक सहायक हो सकती है।

हालाँकि संस्कृत व्याकरण और आधुनिक कंप्यूटर प्रणालियों को पूरी तरह समान मानना उचित नहीं होगा। दोनों की ऐतिहासिक परिस्थितियाँ, उद्देश्य और कार्यप्रणालियाँ अलग हैं। इसलिए इस क्षेत्र में अंतर्विषयी अनुसंधान और विशेषज्ञों का सहयोग आवश्यक है।

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

स्वास्थ्य शिक्षा और पारंपरिक चिकित्सा-ग्रंथ

चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथ भारतीय चिकित्सा इतिहास के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। इनका उपयोग चिकित्सा इतिहास, प्राचीन समाज में स्वास्थ्य की अवधारणा, शरीर संबंधी विचारों तथा चिकित्सा-शिक्षा के विकास को समझने के लिए किया जा सकता है। आधुनिक स्वास्थ्य शिक्षा में इन ग्रंथों के ऐतिहासिक अध्ययन के साथ समकालीन चिकित्सा विज्ञान के विकास पर तुलनात्मक चर्चा की जा सकती है। इससे विद्यार्थी समझ सकते हैं कि चिकित्सा ज्ञान समय के साथ अवलोकन, परीक्षण, अनुभव और अनुसंधान के माध्यम से विकसित होता रहा है। यहाँ एक महत्त्वपूर्ण अंतर बनाए रखना आवश्यक है: किसी प्राचीन चिकित्सा-ग्रंथ का ऐतिहासिक महत्त्व अपने आप में यह प्रमाणित नहीं करता कि उसमें वर्णित प्रत्येक उपचार आधुनिक चिकित्सा मानकों के अनुसार सुरक्षित और प्रभावकारी है। वर्तमान स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों के लिए विश्वसनीय वैज्ञानिक प्रमाण और योग्य चिकित्सा विशेषज्ञों का मार्गदर्शन आवश्यक है। इस प्रकार भारतीय चिकित्सा परंपरा का अध्ययन ऐतिहासिक ज्ञान को समझने और चिकित्सा-विज्ञान के विकास का विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करता है।

कृषि विज्ञान और स्थानीय ज्ञान

भारतीय ग्रामीण समाज में कृषि संबंधी ज्ञान का बड़ा भाग स्थानीय अनुभवों, मौसम की समझ, मिट्टी की विशेषताओं, बीजों और कृषि-चक्रों से संबंधित है। इस ज्ञान को कृषि विज्ञान के साथ जोड़कर अध्ययन करने से विद्यार्थियों को स्थानीय परिस्थितियों और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों के बीच संबंध समझने में सहायता मिल सकती है। कृषि विज्ञान के विद्यार्थी किसी स्थानीय फसल के पारंपरिक उत्पादन-तरीकों का दस्तावेजीकरण कर सकते हैं। इसके बाद वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर मिट्टी की गुणवत्ता, जल की आवश्यकता, उत्पादकता और पर्यावरणीय प्रभावों का मूल्यांकन किया जा सकता है। इस प्रकार पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक कृषि अनुसंधान के साथ जोड़ने से स्थानीय अनुभवों का व्यवस्थित अभिलेखन और उपयोगी पद्धतियों की पहचान संभव हो सकती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली और समग्र शिक्षा

समग्र शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के साथ उसके भावनात्मक, नैतिक, सामाजिक, शारीरिक और सृजनात्मक विकास को भी प्रोत्साहित करना है। ऐसी शिक्षा विद्यार्थियों को केवल परीक्षाओं में सफल होने के लिए तैयार नहीं करती, बल्कि उन्हें जिम्मेदार नागरिक, संवेदनशील मनुष्य और आजीवन सीखने वाला व्यक्ति बनने में सहायता करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उपयोगी शैक्षिक संसाधन उपलब्ध करा सकती है। साहित्य, दर्शन, योग, कला, संगीत, पारंपरिक खेल, इतिहास और पर्यावरण संबंधी ज्ञान का अध्ययन विद्यार्थियों के अनुभवों को व्यापक बना सकता है। भगवद्गीता में कहा गया है—

"योगः कर्मसु कौशलम्॥" — भगवद्गीता, 2.50

अर्थात् योग कर्मों में कुशलता है। शैक्षिक संदर्भ में इस विचार को कार्य के प्रति सजगता, संतुलन, अनुशासन और दक्षता के महत्त्व से जोड़ा जा सकता है। विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक जानकारी देने के बजाय परियोजनाओं, प्रयोगों, समूह-कार्य और वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। इसी प्रकार भगवद्गीता का यह विचार—

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

"समत्वं योग उच्यते॥" — भगवद्गीता, 2.48 का अंश

अर्थात् समत्व को योग कहा गया है। विद्यार्थियों के लिए आत्मसंयम, संतुलित निर्णय और कठिन परिस्थितियों में विवेकपूर्ण व्यवहार के महत्त्व पर चर्चा करने का आधार बन सकता है। यहाँ इसका उद्देश्य किसी धार्मिक मान्यता को अनिवार्य बनाना नहीं, बल्कि एक दार्शनिक विचार के शैक्षिक और नैतिक पक्ष का अध्ययन करना है। प्राचीन ग्रंथों का पाठ, अनुवाद, तर्कपूर्ण विश्लेषण और तुलनात्मक अध्ययन विद्यार्थियों में भाषा-कौशल तथा आलोचनात्मक चिंतन विकसित कर सकता है। साहित्यिक कथाओं और दार्शनिक विचारों के माध्यम से सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व, सहयोग और न्याय जैसे मूल्यों पर चर्चा की जा सकती है। संगीत, नाटक, चित्रकला, शिल्प और मौखिक परंपराओं का अध्ययन विद्यार्थियों को विभिन्न कलात्मक माध्यमों से अपनी अभिव्यक्ति विकसित करने का अवसर देता है। स्थानीय सांस्कृतिक परियोजनाओं और सामुदायिक अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न समुदायों की परंपराओं को समझ सकते हैं। पारंपरिक जल-संरक्षण, कृषि और स्थानीय पारिस्थितिक ज्ञान के अध्ययन से पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर बहुआयामी दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है। शिल्प, भाषा-प्रौद्योगिकी, सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण और विरासत-पर्यटन से संबंधित परियोजनाएँ विद्यार्थियों में व्यावहारिक कौशल विकसित कर सकती हैं। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली का समग्र शिक्षा में समावेश तभी प्रभावी होगा जब उसे केवल पाठ्य-सामग्री तक सीमित न रखा जाए, बल्कि अनुभवात्मक, परियोजना-आधारित और अंतर्विषयी शिक्षण से जोड़ा जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं, कलाओं, संस्कृति तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन को महत्त्व देती है। नीति में भारत के ऐतिहासिक ज्ञान और विभिन्न विषयों में उसके योगदान को शिक्षा के साथ जोड़ने की आवश्यकता व्यक्त की गई है। इसमें यह भी कहा गया है कि भारतीय ज्ञान प्रणालियों का अध्ययन सटीक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ किया जाना चाहिए। इस दृष्टिकोण का महत्त्व इसलिए है कि शिक्षा में सांस्कृतिक विरासत का समावेश विद्यार्थियों को अपने समाज के इतिहास और ज्ञान-संसाधनों से परिचित कराता है। साथ ही, प्रमाण-आधारित अध्ययन यह सुनिश्चित कर सकता है कि सांस्कृतिक गौरव के साथ बौद्धिक ईमानदारी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी सुरक्षित रहें।

उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रभावी समावेश के लिए कुछ उपाय अपनाए जा सकते हैं। जैसे भारतीय दर्शन, साहित्य, इतिहास, गणितीय परंपराओं और भाषा-विज्ञान से संबंधित वैकल्पिक तथा अंतर्विषयी पाठ्यक्रम विकसित करना। संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के मूल ग्रंथों के साथ विश्वसनीय अनुवाद उपलब्ध कराना। विद्यार्थियों को स्थानीय विरासत, लोककलाओं और पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण करने वाली परियोजनाएँ प्रदान करना। भारतीय ज्ञान प्रणाली के शिक्षण के लिए शिक्षकों को विषयगत प्रशिक्षण उपलब्ध कराना। आधुनिक विज्ञान और प्राचीन ज्ञान के बीच तुलनात्मक अध्ययन को प्रोत्साहित करना। शोध-परियोजनाओं में ऐतिहासिक स्रोतों, वैज्ञानिक परीक्षणों और अकादमिक संदर्भों का उपयोग सुनिश्चित करना। भारतीय ज्ञान प्रणाली में विभिन्न समुदायों, भाषाओं और क्षेत्रों के योगदान को शामिल करना।

संस्कृत साहित्य और समकालीन जीवन-मूल्य

संस्कृत साहित्य में ज्ञान, विवेक, परिश्रम, सहअस्तित्व, सामाजिक उत्तरदायित्व और लोककल्याण से संबंधित अनेक विचार मिलते हैं। इन विचारों का आधुनिक संदर्भ में अध्ययन विद्यार्थियों में नैतिक चिंतन और सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक हो सकता है। हितोपदेश में प्रसिद्ध नीति-वचन है—

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

"विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्। पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥"

अर्थात् विद्या विनय प्रदान करती है, विनय से पात्रता प्राप्त होती है, पात्रता से धन और धन से धर्म तथा सुख की प्राप्ति होती है। यह श्लोक शिक्षा और विनम्रता के संबंध को रेखांकित करता है। आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में इसका आशय यह है कि ज्ञान का वास्तविक महत्त्व केवल प्रमाणपत्र या व्यक्तिगत उपलब्धि तक सीमित नहीं है। ज्ञान व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय और सामाजिक योगदान में भी दिखाई देना चाहिए। महाभारत की परंपरा में प्रचलित एक नीति-वचन है—

"अहिंसा परमो धर्मः।"

अर्थात् अहिंसा सर्वोच्च धर्म है। इस विचार को सामाजिक जीवन में सहिष्णुता, संवाद और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता के महत्त्व से जोड़ा जा सकता है। आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में मतभेदों का समाधान संवाद, संवैधानिक मूल्यों और शांतिपूर्ण प्रक्रियाओं के माध्यम से किया जाना चाहिए। एक अन्य प्रसिद्ध मंगलकामना है—

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥"

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का कल्याण हो और किसी को दुःख का भागी न बनना पड़े। यह श्लोक व्यापक मानवीय कल्याण की भावना को व्यक्त करता है। इसे आधुनिक संदर्भ में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य-सेवा, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा और समान अवसरों के महत्त्व से जोड़ा जा सकता है। तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षार्थी को संबोधित करते हुए कहा गया है—

"सत्यं वद। धर्मं चर।" — तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली

अर्थात् सत्य बोलो और धर्मानुसार आचरण करो। यह निर्देश सत्यनिष्ठा और उत्तरदायी आचरण के महत्त्व को प्रस्तुत करता है। अकादमिक जीवन में इसका व्यावहारिक रूप शोध में ईमानदारी, स्रोतों का उचित उल्लेख, साहित्यिक चोरी से बचाव और तथ्यों को निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत करना है। इसी प्रकार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' विश्वबंधुत्व और वैश्विक सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करता है।

इन उद्धरणों को शिक्षा में शामिल करते समय उनके मूल पाठ, संदर्भ और अर्थ की व्याख्या आवश्यक है। संस्कृत साहित्य विविध कालखंडों और विचारधाराओं से निर्मित है; इसलिए उसका अध्ययन केवल उद्धरणों के संग्रह के रूप में नहीं, बल्कि ऐतिहासिक, भाषायी और दार्शनिक संदर्भों के साथ किया जाना चाहिए।

डिजिटल तकनीक और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण

आधुनिक डिजिटल तकनीक सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, अध्ययन और प्रसार के लिए नए अवसर प्रदान करती है। प्राचीन पांडुलिपियाँ, ऐतिहासिक दस्तावेज, लोककथाएँ और अन्य सांस्कृतिक संसाधन समय, पर्यावरण तथा अनुचित रखरखाव के कारण क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। इनका वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण और डिजिटलीकरण भविष्य के अनुसंधान के लिए महत्त्वपूर्ण है। संस्कृति मंत्रालय की ज्ञान भारतम् पहल का उद्देश्य भारत की पांडुलिपि विरासत की पहचान, दस्तावेजीकरण, संरक्षण, डिजिटलीकरण और अध्ययन को प्रोत्साहित करना है। मंत्रालय के अनुसार, राष्ट्रीय पांडुलिपि सर्वेक्षण 16 मार्च 2026 को आरंभ किया गया, ताकि देशभर में उपलब्ध पांडुलिपियों और उनके संग्रह-स्थलों की पहचान की जा सके। डिजिटल तकनीक के माध्यम से महत्वपूर्ण कार्य किए जा सकते हैं।

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

दुर्लभ ग्रंथों की उच्च गुणवत्ता वाली डिजिटल प्रतियाँ तैयार की जा सकती हैं। पांडुलिपियों की भाषा, लिपि, विषय, काल और संरक्षण की स्थिति का व्यवस्थित अभिलेखन किया जा सकता है। संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए खोजयोग्य शब्दकोश और व्याकरणिक संसाधन विकसित किए जा सकते हैं। हस्तलिखित पाठ की पहचान, पाठों की तुलना और प्रारंभिक अनुवाद में कृत्रिम बुद्धिमत्ता सहायता प्रदान कर सकती है। तथापि स्वचालित प्रणालियों द्वारा उत्पन्न त्रुटियों का विशेषज्ञों से सत्यापन आवश्यक है। ऐतिहासिक स्थलों और सांस्कृतिक वस्तुओं की डिजिटल प्रदर्शनियों से दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी सांस्कृतिक संसाधनों तक पहुँच मिल सकती है। डिजिटल संरक्षण में सांस्कृतिक समुदायों के अधिकार, निजी संग्रहों की गोपनीयता, कॉपीराइट और डिजिटल अभिलेखों की दीर्घकालिक सुरक्षा का ध्यान रखना आवश्यक है। इस प्रकार डिजिटल तकनीक भारतीय ज्ञान प्रणाली को संरक्षित करने के साथ-साथ उसे आधुनिक अनुसंधान, शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय अकादमिक संवाद से जोड़ने में सहायक हो सकती है।

निष्कर्ष

विकसित भारत- 2047 की परिकल्पना आर्थिक समृद्धि, वैज्ञानिक प्रगति, सामाजिक समावेशिता और सांस्कृतिक चेतना के समन्वित विकास की अपेक्षा करती है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत इस लक्ष्य को ऐतिहासिक आधार, ज्ञान-संसाधन, सांस्कृतिक आत्मविश्वास और सामाजिक संवाद प्रदान कर सकती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में दर्शन, गणित, भाषा-विज्ञान, चिकित्सा इतिहास, कृषि, स्थापत्य, साहित्य और कला से संबंधित विविध ज्ञान-संसाधन उपलब्ध हैं। इनका आधुनिक विषयों के साथ एकीकरण विद्यार्थियों को व्यापक दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। गणितीय इतिहास और आधुनिक गणित, संस्कृत व्याकरण और संगणकीय भाषाविज्ञान, पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान और पर्यावरण विज्ञान तथा प्राचीन स्थापत्य और आधुनिक अभियांत्रिकी के तुलनात्मक अध्ययन से शिक्षा को अधिक संदर्भपूर्ण और अनुभवात्मक बनाया जा सकता है। समग्र शिक्षा के विकास में भारतीय ज्ञान प्रणाली का महत्व इसलिए है कि यह विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ नैतिक चिंतन, सामाजिक संवेदनशीलता, सृजनात्मकता और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व को भी प्रोत्साहित कर सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं, कला, संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपराओं के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण नीतिगत आधार प्रदान करती है।

फिर भी भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रभावी उपयोग तभी संभव है जब उसका अध्ययन प्रमाण-आधारित, समावेशी और आलोचनात्मक हो। प्राचीन ग्रंथों के ऐतिहासिक महत्त्व को स्वीकार करते हुए उनके विचारों का आधुनिक संदर्भ में विवेकपूर्ण परीक्षण आवश्यक है। सांस्कृतिक गौरव और वैज्ञानिक दृष्टिकोण एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं; बल्कि उनका समन्वय अधिक विश्वसनीय और उपयोगी ज्ञान के निर्माण में सहायक हो सकता है। डिजिटल तकनीक, पांडुलिपि संरक्षण, अंतर्विषयी अनुसंधान, सांस्कृतिक पर्यटन और रचनात्मक उद्योग भारतीय विरासत को संरक्षित करने के साथ उसे समकालीन समाज के लिए उपयोगी बना सकते हैं। इसके लिए स्थानीय समुदायों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं, कलाकारों और नीति-निर्माताओं के संयुक्त प्रयास आवश्यक हैं।

अंततः विकसित भारत का सांस्कृतिक स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिसमें परंपरा और आधुनिकता, ज्ञान और नवाचार, राष्ट्रीय पहचान और वैश्विक सहयोग तथा आर्थिक विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित हो। भारतीय ज्ञान प्रणाली को समग्र शिक्षा, अनुसंधान और सामाजिक विकास से जोड़कर भारत वर्ष 2047 तक ज्ञान-समृद्ध, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से सशक्त राष्ट्र के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति कर सकता है।

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. भारत सरकार। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* 2020। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2020।
2. University Grants Commission. *Guidelines for Incorporating Indian Knowledge in Higher Education Curricula*. नई दिल्ली: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
3. University Grants Commission. *Guidelines for Training/Orientation of Faculty on Indian Knowledge System (IKS)*. नई दिल्ली: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
4. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। *UGC Regulations*. आधिकारिक विनियम-संग्रह। उपलब्ध: https://www.ugc.gov.in/regulations/
5. *श्रीमद्भगवद्गीता*। अध्याय 2, श्लोक 47, 48 एवं 50; अध्याय 4, श्लोक 38।
6. *अथर्ववेद*। काण्ड 12, सूक्त 1, मंत्र 12।
7. *तैत्तिरीयोपनिषद्*। शिक्षावल्ली।
8. *महोपनिषद्*। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' से संबंधित प्रचलित पाठ।
9. पाणिनि। *अष्टाध्यायी*। संस्कृत व्याकरण का मूल ग्रंथ।
10. चरक। *चरक संहिता*। भारतीय चिकित्सा इतिहास का प्रमुख ग्रंथ।
11. सुश्रुत। *सुश्रुत संहिता*। भारतीय चिकित्सा एवं शल्य-चिकित्सा इतिहास का प्रमुख ग्रंथ।
12. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय। *Gyan Bharatam Mission*. आधिकारिक सूचना एवं कार्यक्रम दस्तावेज।
13. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय। *Launch of Gyan Bharatam National Manuscript Survey to Map India's Manuscript Heritage*. 16 मार्च 2026।
14. Ojha, Seema Shukla. "Knowledge of India in NEP 2020: Key to Restore Pride in School Children." *Journal of Indian Education*, खंड 47, अंक 3, 2021, पृ. 7–12।
15. भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारतीय दर्शन, सांस्कृतिक विरासत और अंतर्विषयी शिक्षा से संबंधित विश्वविद्यालयों तथा शोध-संस्थानों के प्रमाणित अकादमिक प्रकाशन।